E-ISSN 2582-5429
SJIF Impact - 5.675

AKSHARA

MULTIDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2024 Special Issue 11 Volume I

Scanned with OKEN Scanner

E- ISSN 2582-5429

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal

February 2024 Special Issue 11 Volume I SJIF Impact- 5.67

Index

Sr.No	*Title of the Paper*	Author's Name	Pg.No
1	Cherished Echoes: A Recollection to Heartfelt Memories	**Prof. Dr. Manu**	**05**
2	Violence Against men in India: A Case for Research in Tackling the Menace	**Prof. A. K Keshot Anjali Chaudhary**	**10**
3	Drug Trafficking: A Major Source of Money Laundering In India	**Prof. Dr. Ashok Keshot Aishwarya Singh**	**16**
4	Business & Management Research Methods	**Miss Apeksha G. Dubey**	**21**
5	An Unsung Social Worker: Ms. Sushila Singh	**Prof. Aradhna Shrishti Kannojia**	**25**
6	Triple Talaq and Muslim Women's Rights: A Study	**Dr. Ajay Vikram Singh**	**29**
7	A Study on Utilization of Common Service Center among general public in Jalgaon City	**Dr. Gayatri Khadke Miss. Kiran R. Bari**	**35**
8	A Influence of Covid -19 on Online shopping behavior of Youth in Jalgaon City	**Dr.G. D. Khadke Mrs.Harshala D. Deshmukh**	**40**
9	Accounting Impact On India's Economic Landscape	**Miss. Vishakha V. Patil**	**44**
10	Effect of Yoga and Meditation Training on Physical Fitness Components of Archery Students	**Dr. Anita Avinash Kolhe**	**46**
11	A Human Rights-Based Critical Discourse on the Abolition of Child Sexual Abuse in India	**Prof. A.K. Keshot Aarzoo Bishnoi**	**49**
12	Environmental Accounting in Indian Context	**Vishal H. Baldaniya Dr. Chandrakant R. Deware**	**54**
13	Make in India Roll of Business and Commerce	**Dr. Piyush U. Nalhe**	**58**
14	The Mythological Tapestry of Amish Tripathi	**Dr. Dnyaneshwar S. Chavan Mr. Vijay K. Shinde**	**61**
15	A Study of NEP 2020 with Reference to its Salient Features	**Anu Syriac Dr Anjali Shah**	**65**
16	A comparative study of intelligence of school students in Yawal Tahsil.	**Dr.Narendra D. Mahale**	**69**
17	A Study of Adjustment of Higher Secondary Schools Students In Context To Certain Variables	**Dr. Anjali Shah T.S. SUMA**	**72**
18	शब्द चुनें : स्वभाव बुनें	डॉ.मंजु अरोरा	75
19	दौड़' : बदलते हुए परिवेश का यथार्थ दस्तावेज	डॉ.अमितभाई एन. पटेल	79
20	हिंदी साहित्य में व्यंग्य	डॉ. लावणे विजय भास्कर	83
21	नानक साहित्य की पक्षधरता	डॉ. कमलेश सिंह नेगी	86
22	महाकविभवभूतेः रूपकेषु दाम्पत्यविमर्शः	मेनका	89
23	हिंदी की लघुकथाओं में महानगरीय परिवेश	प्रो. कल्पना राजेंद्र पाटिल	93
24	समाज और संस्कृति पर तुलनात्मक साहित्य का प्रभाव	शैक. मेहराज	96
25	वैदिक काल में नारी	संध्या राणी नाएक	98
26	धूमिल के काव्य में सामाजिक एवं लोकतान्त्रिक भूमिका	डॉ.न.पु.काळे	101

Scanned with OKEN Scanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
February 2024 Special Issue 11 Volume I SJIF Impact- 5.67

26

धूमिल के काव्य में सामाजिक एवं लोकतान्त्रिक भूमिका

डॉ. न. पु. काळे
सहा.प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
वसंतदादा पाटील महाविद्यालय, पाटोदा, जि.बीड

शोध सारांश

कवि धूमिल साठोत्तरी कविता के मूर्धन्य रचनाकार रहें हैं| धूमिल की समग्र कविता हमें वास्तविकता का बोध कराती हैं| धूमिल सामाजिक सरोकार के कवि रहें हैं| धूमिल की कविता यह व्यवस्था विरोध को अपनाती है |समकालीन सामाजिक,राजनितिक,आर्थिक,न्याय आदि व्यवस्था का पूरजोर विरोध धूमिल निडरता के साथ करते हैं| धूमिल सही मायने में जनता के कवि रहें है| उनका व्यवस्था विरोध यह अपने किसी स्वार्थ के कारन नहीं रहा है बल्कि वह विषमता का विरोध करके सामाजिक समता को पूरी सक्षमता के साथ स्थापित करना चाहते है| स्वार्थ के कारन आज मानवी मूल्यों का पतन हो रहा है|

"सबके सब व्यवस्था के पक्ष में चले गये हैं और विपक्ष में सिर्फ कविता है" यह विपक्ष की महत्वपूर्ण भूमिका लेकर कवि धूमिल अपनी कविता के माध्यम से जनमानस को व्यवस्था के सारेहथकंडो से परिचित कराते हुए अपना सामाजिक दायित्व बखूबी निभाते हुए दिखाई देते है| धूमिल की कविता आम आदमी,सर्वहारा वर्ग,शोषितो का पक्ष लेती हैं एवं उसे शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए व्यवस्था विरोध के लिए मनोदशा की भूमि तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य करती हैं| हर प्रकार के शोषण का विरोध करके धूमिल समता की स्थापना करना चाहते हैं| धूमिल सामाजिक समता के पक्षधर रहें है उनकी कविता सामाजिकता को अपनाकर लोकतान्त्रिक तत्वों को पुरस्कृत करती हैं|

प्रस्तावना :

धूमिल अपने समय के प्रति ईमानदार रहें हैं| धूमिल ने समकालीन सामाजिक,राजनितिक,धार्मिक,लालफीताशाही आदि व्यवस्था का अपनी कविता द्वारा यथार्थरूप से चित्रण किया है| इसके बदले समकालीन व्यवस्था से जो भी दंड मिले उसकी परवाह धूमिल ने कभी नहीं की है| व्यवस्था विरोध में वे आक्रामकता को अपनाते है |धूमिल की कविता में सामाजिकता का चित्र सर्वत्र दिखाई देता है| राजनितिक षडयंत्रो का भंडाफोड़ करके वे आम आदमी को हरकत में लाना चाहते हैं|

विषय प्रवेश :

धूमिल की कविता का केंद्र बिंदु आम आदमी रहा है |अपने समकालीन स्थिति गति का वे समाज को बोध कराते है |धूमिल की बहु चर्चित काव्य कृति "संसद से सड़क तक"1972 में प्रकाशित हुई| इस शीर्षक से ही इसके भीतर की कविता का अनायास रूप से परिचय हो जाता है|संसद एवं सडक दोनों भी शब्द प्रतीकात्मक रूप से सामने आते है| सामान्य आदमी तथा व्यवस्था का बोध इससे हो जाता है|आम आदमी की त्रासदी,पीड़ा,उसका हो रहे शोषण,दास्यता को दर्शाती है| पूंजीवादी व्यवस्था के बढ़ते कदम एवं शोषण के नये नये तरिके,आम आदमी को उसके हक़ का पानी,उसके हक़ की रोटी,उसके हक़ की जमीन क्यों नसीब हो रहीं है? ढेर सारे सवाल धूमिल ने उठाकर व्यवस्था से इन सवालों का जवाब माँगा हैं| संसद से सड़क तक काव्य कृति के बारे में डॉ कल्याण चन्द्र लिखते हैं-"इस संकलन में संसद से सड़क तक शीर्षक की कोई कविता नहीं है,किंतु इसके बावजूद यह नाम सार्थक है|"1धूमिल कीसमग्र कविता में भारतीय राजनीति और जनता का चित्रण किया गया है| धूमिल ने जो सवाल उठाये है वह देखीए –आजादी क्या है?आजादी किसे मिली?इसका कोई खास मतलब होता हैं? धूमिल लिखते है..

"क्या आजादी
सिर्फ तीन थके हुए रंगों का नाम है
जिन्हें एक पहिया धोता है
या इसका कोई खास मतलब होता है|"

शायद इस सवाल का जवाब हमें आज की तारीख में भी मिलना मुश्किल है| रोटी और संसद कविता में वे लिखते है-

"एक आदमी रोटी बेलता है
एक आदमी रोटी खाता है
एक तिसरा आदमी भी है,
जो न रोटी बेलता है न रोटी खाता है,

Scanned with OKEN Scanner

E- ISSN 2582-5429
AMRJ
Akshara Multidisciplinary Research Journal
Single Blind Peer Reviewed & Refereed International Research Journal
February 2024 Special Issue 11 Volume I
SJIF Impact- 5.67

वह सिर्फ रोटी से खेलता है,
मैं पूछता हूँ वह तिसरा आदमी कोन है?
मेरे देश की संसद मौन है|"2

आज भी आम आदमी के सामने ढेर सारे सवाल है लेकिन आज की संसद,सांसदों से कोई बुद्धिजीवी सवाल पूछ सकते है क्या? जो कोई सवाल पूछेगा वह ख़रीदा जायेगा या फिर उसे व्यवस्था से बाहर किया जाता है |वाकई संसद को मौजूदा सांसद ही चलाते है?या फिर कोई संसद को चलाने वाला,सांसदों को अपनी उंगलियों पर चलाने वाला कोई अन्य बहुरुपिया है? यही सवाल कवीने उठाया है| शायद आज धूमिल होते,तो बहुत सारे नये सिरे से व्यवस्था से सवाल पूछते| धूमिल के सवालों पर संसद को मौन रहना पड़ता है इसका अर्थ क्या है! हर एक व्यक्ति का अपनी धरती पर प्यार होता है|आज देश प्रेम नुमाइश बनता दिखाई देता है | अब नये जुमले,नये मुहावरे जुड़ रहे है,इसकारण देश प्रेम का प्रदर्शन निहायद जरूरी बन गया है नहीं तो शहर नक्सली का ठप्पा मारा जाता है| भूख के लिए रोना कवि को पागलपन एवं देश प्रेम अब सुरक्षा का साधन बन गया है| धूमिल लिखते है – **"रोना – और भूख के लिए / निरा पागलपन है / देश प्रेम मेरे लिए / अपनी सुरक्षा का / सर्वोत्तम साधन है|"** (कल सुनना मुझे,पृ. 49)

देश प्रेम मेरे लिए अपनी सुरक्षा कासर्वोत्तम साधन है| यह पंक्तिया मौजूदा राजनितिक स्थिति की वास्तविकता को अभिव्यक्त करती है| आम आदमी अच्छे दिन का केवल इंतजार ही कर सकता है! इसके आलावा उसके पास अन्य विकल्प ही क्या बचा है? आम आदमी को इंतजार ही करना पड़ता है | नई योजनाओ के सपने,आज से बेहतर जिंदगी के सपने,भरे पेट के सपने और अच्छे दिन के सपने,लेकिन जैसे ही हाथ में सत्ता की बागडोर आ जाती है तो वह इरादे चुनावी जुमले बन जाते है! आम आदमी का मोहभंग सदियों से होता आ रहा है|

धूमिल लिखते है – **"मैइंतजार करता रहा .. / इंतजार करता रहा.. / इंतजार करता रहा.. / जनतंत्र,त्याग,स्वतंत्रता../ संस्कृति,शांति,मनुष्यता... ये सारे शब्द थे / सुनहरे वादे थे / खुश फहमइरादे थे |"** 3

जनतंत्र,त्याग,स्वतंत्रता,मनुष्यता,शांति का धूमिल बरसो तक इंतजार करते रहे| वहि इंतजार आज भी आम आदमी को है| वाकई यह सारे के सारे केवल शब्द ही है ? या इनका भी कोई खास मतलब होता है?यह सवाल उठता है| चुनावी दौर में जनता से जो वादे किए जातेबाद में प्रधानमंत्री को कहना पड़ता है भाई वह जुमला था! राजनीतिज्ञ सदियों से अवाम को बेवकूफ बनाती आ रही है| जनता क्या है ? वह राजनितिक सत्ता को हथियाने का मात्र एक जरिया है? शायद यही सही है!

धूमिल के शब्दों में – **"यह मेरा देश है / यह मेरे देश की जनता है / जनता क्या है ? / एक शब्द ..सिर्फ एक शब्द है .. / कुहरा,कीचड़ ओर कांच से बना हुआ .. / एक भेड है / जो दुसरो की ठण्ड के लिए / अपनी पीठ पर उन की फसल ढो रही है |"**

धूमिल जनवादी कवि है| उनके काव्य में जनवादी चेतना का स्वर सुनाईदेता है |समाज तथा राजनीती में दोगलापन सर्वत्र दिखाई देता है| संवेदनशील व्यक्ति को यह व्यवस्था का घिनौनारूप अस्वस्थ करा देता है | विसंगतिया आज हर एक क्षेत्र में बहुलता से दिखाई देती है| धूमिल जिन्दगी में जीने के लिए सही तर्क का होना बहुत जरूरी मानते है,सही तर्क होने भी चाहिए वह निहायत जरूरी भी है| लेकिन अफ़सोस ..धूमिल को इसीलिए लिखना पड़ा – **"और बाबूजी ! असल बात तो यह है कि / जिन्दा रहने के पीछे / अगर सही तर्क नहीं है /तो रामनामी बेचकर या रंडियों की / दलाली करके रोजी कमाने में कोई फर्क नहीं है|"**

धूमिल की कविता में आक्रामकता के साथ ही व्यंग्य भी है.जो झकजोर देता है| पेट की आग क्या है ? उसके लिए आदमी मजबूर है | धूमिल लिखते है – **" कुछ है जिन्हें शब्द मिल चुके है / कुछ है जो अक्षरों के आगे अंधे है / वे हर अन्याय को चुपचाप सहते है /और पेट की आग से डरते है|"4**

अक्षरों के आगे जो अंधे है उनकी मज़बूरी समझ सकते है लेकिन जिन्हें शिक्षा मिली है और फिर नही वे हर अन्याय को चुपचाप स्वीकार करते है उनका क्या ?

निष्कर्ष :

धूमिल की कविता आम आदमी की त्रासदी,पीड़ा,शोषण का चित्रण करके उसे व्यवस्था के षड्यंत्रों से वाकिब करके उन्हें हरकत में लाने का प्रयास भी करती है | धूमिल की कविता में व्यवस्था विरोध प्रमुख रहा है |कवि मनोरंजन के लिए कविता लेखन को अपनाते नहीं है बल्कि कविता लेखन उनके लिए सामाजिक दायित्व का माध्यम है| कविता उनके लिए आदमी को तमीज सिखाने का प्रभावशाली माध्यम है| उनकी कविता जहाँ जीवन अभो भी तिरस्कृत है वहां पहुंचना चाहती है| सामाजिक चित्रण के साथ ही वे जनता के भीतर खुद्दारी भी जगाना चाहते है |वे लिखते हैं – "तनो अकडो,जड़ पकड़ो,बदलो अपने आपको बदलो ,यह दुनिया बदल रही हैं|" सामाजिक समता को कवि स्थापित करना चाहते है | कवि को वह व्यवस्था चाहिए जिसमे कोई किसीकी रोटी छिनेगानहीं,कोई बच्चा भूखा रहेगा नहीं,कोई भी दवा के आभाव में मरेगा नहीं | और ज्यादा कवि ने व्यवस्था से माँगा ही क्या है ?

Scanned with OKEN Scanner

धूमिल सामाजिक, राजनैतिक की पक्की समझ रखने वाले कवि रहे है। [illegible] ये लिखते है - "जैसे किसकी पूंछ उठाई है उसको मादा पाया है।" आज अगर धूमिल जीवित होते तो मौजूदा राजनीति की धज्जियां उड़ा देते। आजादी के बाद उन्होंने बीस साल बाद कविता लिखकर लोकतंत्र को चित्रित किया था आज वे आजादी के पचहत्तर साल बाद कविता लिखते। शब्द केवल शब्द नहीं है, उनका कोई महत्वपूर्ण अर्थ भी होता है राजनीति में लिप्त [illegible] की धूमिल ने पुरजोर विरोध किया है। धूमिल ने जो सवाल व्यवस्था से पूछे थे उन सवालों का जवाब तब भी हमारे संसद के पास नहीं थे, और आज भी उन्हीं बुनियादी सवालों के जवाब हमारे [illegible] संसद [illegible] के पास भी नहीं है। [illegible] है हमारी संसद को कौन चलाता है तो धूमिल यह जवाब देना [illegible] संसद की निंदा करने का साहस धूमिल के ही पास है।

संदर्भ:

1 समकालीन कवि और काव्य, कल्याण चंद्र पृ 41
2 कल सुनना मुझे, धूमिल पृ 66
3 संसद से सड़क तक, धूमिल पृ.99
4 संसद से सड़क तक , धूमिल पृ.39